॥ श्रीहरिः ॥

212

हिन्दी बालपोथी

शिशु पाठ

भाग-दूसरा

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

हिन्दी बालपोथी

शिशुपाठ

दूसरा भाग

नम्र निवेदन

पूर्व दो भागोंमें प्रकाशित हिन्दी बालपोथी (शिशुपाठ) बालकोंकी सुविधाके लिये अब तीन भागोंमें प्रकाशित की गयी है। शिशुपाठका यह दूसरा भाग है। तीसरे भागमें भी संयुक्त अक्षरोंके पाठ हैं। तीनों भागोंको शिशु प्रथम, शिशु द्वितीय तथा पहली कक्षाके पाठ्यक्रममें क्रमशः और वर्षभरके पाठ्यक्रममें तीनों भाग साथ रखने चाहिये।

गीताप्रेसका उद्देश्य है—**बालकोंके लिये सरल, आदर्श सदाचारयुक्त सस्ती पुस्तकोंका प्रचार, जिससे पढ़ाईका खर्च घटे और सद्भावोंका प्रसार हो। ये पुस्तकें आधुनिक शिक्षाक्षेत्रके अनुभवी तथा ऊँचे विद्वानोंके सहयोग-सम्मतिके अनुसार उन्हींकी देख-रेखमें लिखी गयी हैं। इससे इनकी उपयोगितामें संदेह नहीं है। हमारा नम्र निवेदन है कि जनता और भारतके सभी प्रान्तोंके शिक्षाधिकारी महानुभाव अपने-अपने क्षेत्रमें इन्हें अपनाकर प्रचारकार्यमें हमारी सहायता करें एवं त्रुटियों—भूलोंको बताकर तथा उचित आवश्यक नये सुझाव देकर हमें अनुगृहीत करें।**

विनीत— **प्रकाशक**

गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०७७ अठहत्तरवाँ पुनर्मुद्रण ८,०००
कुल मुद्रण २०,४३,५००

❖ मूल्य—₹ ६
(छः रुपये)

कूरियर/डाकसे मँगवानेके लिये
गीताप्रेस, गोरखपुर—273005
book.gitapress.org
gitapressbookshop.in

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०, २३३१२५१
web: **gitapress.org** e-mail : **booksales@gitapress.org**

पाठ १

ईश-विनय

सूरज चम चम चमक रहा है।
दम दम दम दम दमक रहा है॥

कोयल मीठी तान सुनाती।
बुलबुल है मीठा फल खाती॥

गाय बैल वन चरने जाते।
सुंदर हरे खेत लहराते॥

ठंडी ठंडी हवा निराली।
चुनते फूल बागमें माली॥

जिसने यह सब है उपजाया।
उसी ईशने हमें बनाया॥

आओ हम सब मिलकर साथ।
उसे झुकायें अपना माथ॥

पाठशालाका पहला दिन

कल पाठशाला खुलनेवाली है। माधव अगली कक्षामें आ गया है। आज सबेरे वह अपनी नयी किताबें खरीदकर लाया। किताबें लेकर वह पिताजीके पास गया और सब किताबें उनके सामने रख दीं। पिताजी किताबें देखकर बड़े खुश हुए। बोले— 'माधव! कल पाठशाला खुलेगी। मैं तुमको कुछ बातें बताता हूँ, उनको याद रखो और अपने काममें लाओ। गुरुजी इस कक्षामें तुमलोगोंको ये बातें बतायेंगे। मैं तुमको पहलेसे ही बता दे रहा हूँ जिससे तुम सब लड़कोंसे आगे रहोगे।'

माधवने हाथ जोड़कर कहा—'बताइये पिताजी, मैं जरूर उनको याद रखूँगा और अपने काममें लाऊँगा।'

पिताजी बोले—'इन किताबोंपर मोटा कागज चढ़ा लो। कागजके ऊपर अपना नाम, अपनी पाठशालाका नाम और किताबका नाम लिख लो। किताबके भीतर कहींपर भी नाम न लिखना। उसमें किसी चीजसे निशान भी न बनाना। किताबको सदा साफ रखना चाहिये। जो लड़के अपनी किताबको ठीक तरह नहीं रखते वे कभी पढ़ नहीं सकते।'

अपनी कलम, दावात और कापीको भी सदा साफ रखो। कापीके ऊपर भी नाम लिख लो। कलमको ठीकसे रखना। पैरके नीचे आनेसे यह टूट जायगी। पढ़ाईकी चीजको कभी पैर नहीं लगाना चाहिये। पैर लग जाय तो उठाकर उस चीजको सिरसे लगाओ।

कल पाठशाला सात बजे लगेगी। तुम रोज छः बजे उठते हो। कल कुछ पहले उठना। रोजका काम पूरा करके सात बजेसे पहले घरसे चल देना। पाठशाला सदा ठीक समयपर पहुँचना चाहिये।

पाठशालामें पहुँचकर गुरुजीके चरण छूना। कक्षाके बहुत-से साथी भी कल मिलेंगे। उनसे मिलते ही कहना—'भैया! राम राम।'

कल कुछ नये लड़के भी अपना नाम लिखवाने पाठशालामें आयेंगे। नये लड़के गुरुजीसे डरा करते हैं। इसलिये तुम अपने साथियोंके साथ नये लड़कोंसे मिलना। उनको समझाना कि 'गुरुजीसे कभी नहीं डरना चाहिये। गुरुजी बड़े भले हैं। वे लड़कोंको बहुत लाड़से पढ़ाते हैं।'

पिताजीकी बातें माधव मन लगाकर सुनता रहा। पिताजीके चुप हो जानेपर उसने सिर झुकाकर कहा—'पिताजी! मैं ऐसा ही करूँगा।'

पाठ ३

पढ़ाई

उठो सबेरे रगड़ नहाओ।
ईश विनय कर सीस नवाओ॥
रोज बड़ोंके छूओ पैर।
करो किसीसे कभी न बैर॥
पढ़ो पाठ फिर करो कलेवा।
बढ़िया काम बड़ोंकी सेवा॥
करो न बातें लंबी-चौड़ी।
कभी न खेलो गोली-कौड़ी॥
दौड़ कूदके खेलो खेल।
रखना सब लड़कोंसे मेल॥
सबसे बढ़कर कौन कमाई।
झटसे कह दो—एक पढ़ाई॥

पाठ ४

हमारा देश

यह हमारा भारत देश है। इसमें हिन्दू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सभी रहते हैं। इन लोगोंके मत अलग-अलग हैं। फिर भी ये बड़े मेलसे रहते हैं। इनमेंसे कोई चन्दन लगाता है। कोई केश रखता है। कोई धोती पहनता है। कोई पाजामा पहनता है। हिन्दू मन्दिर जाते हैं। सिख गुरुद्वारे जाते हैं और ईसाई गिरजाघर। मुसलमान मसजिदमें नमाज पढ़ते हैं और पारसी भाई अगियारीमें जाकर आगकी पूजा करते हैं।

हम सब भारत माताके लाल हैं। हम एक ही भगवान्‌की संतान हैं। भाई-भाई हैं। हमें आपसमें हिल-मिलकर रहना चाहिये।

पाठ ५

ईमानदार लड़का

मोहन एक गरीब लड़का था। वह अपने घरमें अकेला ही था। वह घास बेचकर अपना पेट भरता था। घास जंगलसे लाकर शहरमें बेच देता और जो पैसे मिलते उनसे रूखा-सूखा खा लेता। एक धनी आदमीने उससे घास लेना ठीक कर लिया। मोहन रोज उस धनी आदमीको घास देने लगा।

एक दिन मोहनको जंगलमें घास कम मिली। जब वह धनी आदमीके पास घास लेकर गया, तब उसने उसको उतने ही पैसे दिये जितने रोज देता था। मोहनने कहा—'बाबूजी, आज घास कम है। इसलिये आज मुझे पैसे कम मिलने चाहिये।' धनी आदमी मोहनकी ईमानदारीपर बड़ा खुश हुआ। उसने मोहनको अपनी गायका काम करनेके लिये रख लिया।

मोहन गायकी खूब सेवा करता। उसके लिये हरी-हरी घास लाता। समयपर पानी पिलाता। जगहको साफ रखता। तालाबपर ले जाकर नहलाता। इससे गाय बहुत खुश रहती। वह पहलेसे दूना दूध देने लगी।

मोहनके इन कामोंसे धनी आदमी बहुत खुश हुआ। वह मोहनको अपने लड़केके समान समझने लगा।

पाठ ६

जलेबीवाला

वह देखो, जलेबीवाला आ गया। लड़के भाग-भागकर उसके पास पहुँच रहे हैं और जलेबी खरीदकर खड़े-खड़े ही खा रहे हैं। पर इससे उनको जो नुकसान होता है, इसको वे नहीं समझते। इसके खानेसे शरीरमें रोग पैदा होते हैं, कारण

कि यह जलेबी जमाये तेलमें तली गयी है। खराब पुराना मैदा लिया गया है। हर कोई बिना हाथ धोये इसको गन्दे हाथों छूते हैं और वैसे ही खाते हैं, खोमचा ढका न होनेसे जलेबियोंपर पंखवाले कीड़े भिनभिना रहे हैं, जो रोग फैलानेमें कारण होते हैं।

इसके सिवा बाजारकी मिठाई तथा चाटकी जब आदत पड़ जाती है, तब वह सहजमें छूटती नहीं। चटोरे लड़के पैसे पास नहीं होते, तब माँ-बापको तंग करते हैं या घरसे पैसे चुराकर लाते हैं, जिससे उनमें चोरीकी बान पड़ जाती है। खोमचेवालेसे उधार लेते हैं तो वह दुगुने-तिगुने पैसे वसूल करता है। पैसे न

मिलनेपर गालियाँ देता है। माँ-बापसे शिकायत करता है और उनसे लड़कर पैसे लेता है। इससे उनको दुःख होता है। वे बालकपर नाराज होते हैं।

इसलिये खोमचेवालेकी जलेबी, मिठाई, चाट बिलकुल नहीं खानी चाहिये।

त्यागने योग्य काम

झूठ बोले, वह झूठा।
चोरी करे, वह चोर।
निन्दा करे, वह निन्दक।
चुगली करे, वह चुगलखोर।

तुम झूठे नहीं हो।
तुम चोर नहीं हो।
तुम निन्दक नहीं हो।
तुम चुगलखोर नहीं हो।

पाठ ७

पाईवाले अक्षरोंकी मिलावट

पाईवाले अक्षरको हो अगर मिलाना। तो उसकी पाईको लेकर दूर हटाना॥

ख्+य = ख्य मुख्य संख्या च्+छ = च्छ अच्छा मच्छर
ज्+य = ज्य ज्योति राज्य ञ्+च = ञ्च = (ञ्च) चञ्चल तमञ्चा
ण्+ड= ण्ड भण्डार कण्डा।

हरि बहुत अच्छा लड़का था। वह रोज अपने बगीचे जाता था। वह अपने साथ चने ले जाता था। उसने बहुत-से मोर और तोते पाल रखे थे। उनको वह

रोज बड़े दुलारसे चने खिलाता था। वे पक्षी उससे तनिक भी नहीं डरते थे और उसके डाले हुए चने बड़ी खुशीसे चुगा करते थे।

एक दिन हरिका साथी नारायण उसके साथ हो गया। वह बड़ा चञ्चल था। वह सदा अपने पास एक नकली तमञ्चा रखता था। उसने हरिको मोर और तोतोंको चने डालते देखा। उसे यह काम अच्छा नहीं लगा। उसने हरिसे कहा—'भैया! तुम अपने खानेकी चीज मोर और तोतोंको क्यों खिलाते हो?' हरि बोला—'भैया! मेरी माँने मुझे यही सिखाया है। माँ कहती थी कि खाने-पीनेकी सब चीजें भगवान्‌ने बनायी हैं। वे सब भगवान्‌के भण्डारसे आती हैं। उनको खाने-पीनेका जैसा हमारा हक है, वैसा ही और सब जीवोंका है, क्योंकि सभी जीव भगवान्‌के हैं। हमारे यहाँ माँ जो चने मँगवाती है, उसमेंसे कुछ चने वह अलग मोर-तोतोंके लिये रखवा देती है। मैं उन चनोंमेंसे ही रोज उनको डाला करता हूँ। वे चने इनके ही हकके हैं। उन चनोंको हम खायेंगे तो पाप लगेगा। दूसरेके हककी चीज खाना पाप है।'

नारायणको हरिकी बात समझमें आ गयी। दूसरे दिनसे वह भी अपने घरसे चने लेकर आने लगा।

अभ्यास— १-हरि किनको चने खिलाता था?
२-नारायणने उससे क्या कहा?
३-हरिने नारायणको क्या उत्तर दिया?

त्यागने योग्य काम—

दूसरोंकी निन्दा मत करो।
निन्दक मत कहलाओ।
दूसरोंकी चुगली मत करो।
चुगलखोर मत कहलाओ।

(क) 'क' और 'फ' की मिलावटमें केवल इनकी टाँगें नहीं मोड़ी जातीं। टाँग सीधी रखकर आगे दूसरा अक्षर लिख दिया जाता है। जैसे—क्या, क्योंकि, दफ्ती आदि।

(ख) 'रा' आधा बनानेके लिये जब उसकी पाई हटा दी जाती है, तब उसमें 'रा' के भ्रमकी सम्भावना रहती है; अतः ऐसे 'ण' की पाई निकालकर अक्षरके साथ मिलाना ठीक होगा।

पाठ ८

त्+त= त्त   पत्ता कुत्ता (त्त)   ध्+य= ध्य   ध्यान संध्या
त्+स=त्स   उत्सव उत्साह   न्+द= न्द   बन्दर हिन्दी
थ्+य= थ्य   मिथ्या पथ्य

पत्थर त्यौहार बत्ती सन्त
कुन्ती चन्दन

आज नागपञ्चमीका त्यौहार है। पाठशाला बन्द है। जब-जब त्यौहार होता है तब-तब पाठशाला बन्द हो जाती है। आज संध्याको गाँवके बाहरवाले तालाबपर बड़ा भारी उत्सव होगा। सब लड़के अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर जायँगे। वहाँ एक सन्तकी कुटी है। वे

सब लड़कोंके माथेपर चन्दन लगाते हैं; परंतु जो लड़का गन्दा होता है या जिसके कपड़े मैले रहते हैं, उसके माथेपर वे चन्दन नहीं लगाते। वहाँ एक बड़ा मेला लग जाता है। खेलनेकी बहुत चीजें मिलती हैं। लोग नागदेवताकी पूजा करते हैं और साँपकी बाँबीमें दूध छोड़ते हैं।

कुन्ती बहिन बहुत दिनोंसे बीमार थी। उसको आज पथ्य दिया है। वह भी तालाबपर चलना चाहती है। परन्तु उसको ले न जायँगे। आते समय देर हो जायगी। बत्ती जल जानेपर आना होगा। वहाँ बन्दर भी बहुत हैं। कुन्ती बन्दरोंसे बहुत डरती है।

त्यौहारके दिन बड़ा आनन्द आता है। घरपर अच्छी-अच्छी चीजें खानेको बनती हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सबके यहाँ त्यौहार होते हैं।

अभ्यास— १- नागपञ्चमीके दिन लोग किसकी पूजा करते हैं?
२- सन्त किसके माथेपर चन्दन नहीं लगाते?
३- त्यौहारके दिन आनन्द क्यों आता है?

पाठ ९

प्+य= प्य प्यास प्यार
प्+प=प्प छप्पर थप्पड़
ब्+ब= ब्ब धब्बा गुब्बारा
भ्+य=भ्य अभ्यास सभ्यता
म्+य= म्य म्यान म्याऊँ
म्+भ= म्भ शम्भु खम्भ

प्याला कुप्पा सब्जी सभ्य
अम्मा लम्बा

देखो यह एक गाँव है। इसका नाम राजापुर है। गाँवके घर शहरके घरोंकी तरह नहीं होते। यहाँ छप्परवाले घर अधिक होते हैं। किसी-किसी घरके ऊपर खपरैल भी है। ईंटका मकान एक भी नहीं है। छप्परके घरमें खम्भेकी जगह मोटी लकड़ी लगायी

जाती है। उसे थूनी कहते हैं। थूनियोंके सहारे छप्पर रहता है। शम्भु हमारा मित्र है। उसका घर इसी गाँवमें है। आज वह एक कुप्पा लेकर आया है। वह बाजारसे जलानेका तेल ले जायगा।

गाँवके लोग बड़े सभ्य और सीधे होते हैं। बड़ी नरमीसे बात करते हैं। उनके घरपर कोई भूखा जाय तो वे उसे भोजन देते हैं। प्यासा जाय तो पानी पिलाते हैं। वे अपने जानवरोंको बहुत प्यार करते हैं।

गाँवके लोग बड़े मेहनती होते हैं। उन्हें जाड़ा और गरमी सहनेका अभ्यास रहता है। वे कड़ी मेहनत करके अनाज पैदा करते हैं। यदि ये लोग खेती करना छोड़ दें तो शहरोंके लोग भूखों मर जायँ। ये लोग तरह-तरहकी सब्जी भी पैदा करते हैं। सब्जीको ये शहरमें बेच आते हैं।

गाँवकी जलवायु अच्छी होती है। लोग बीमार कम पड़ते हैं। शहरकी-सी गंदगी यहाँ नहीं रहती। किंतु जो गाँव गंदा होता है, वहाँ बीमारी आ जाती है। गाँवोंको खूब साफ रखना चाहिये।

अभ्यास— १- गाँवमें किस तरहके घर होते हैं?

२- गाँववालोंमें क्या-क्या गुण होते हैं?

३- बीमारी कैसे आती है?

पाठ १०

ल्+य= ल्य कल्याण कौसल्या ल्+ह=ल्ह चूल्हा आल्हा

व्+य= व्य व्यायाम व्यापार श्+य= श्य अवश्य श्याम

श्+व= श्व (श्व) श्वेत विश्वास

ष्+ण= ष्ण कृष्ण विष्णु स्+त= स्त पुस्तक सस्ती

स्+व= स्व स्वर स्वाद क्ष्+म= क्ष्म लक्ष्मण लक्ष्मी

चित्रमें जो चार हाथवाले लेटे हैं, इनको देखो। ये भगवान् विष्णु हैं। ये सारे संसारके स्वामी हैं। ये सब जीवोंका कल्याण करते हैं। इनको ईश्वर कहते हैं। इनकी घरवालीका नाम लक्ष्मीजी है। वे सदा इनकी सेवा करती हैं। शेषनागने अपने शरीरका बिस्तर बना दिया है। उसीपर ये लेटे हैं। शेषनागके हजार फन होते

हैं, उन्होंने विष्णुभगवान्पर अपने फनोंका छाता तान दिया है।

कभी-कभी संसारमें दुष्ट बहुत बढ़ जाते हैं। वे साधु और संतोंको कष्ट देते हैं। उस समय विष्णुभगवान् कोई-न-कोई रूप धरकर संसारमें आते हैं। इसीको अवतार कहते हैं। वे सब दुष्टोंको मारकर साधु और संतोंकी रक्षा करते हैं।

एक समयकी बात है। लंकाका राजा रावण बड़ा दुष्ट था। उसने बड़ा अत्याचार किया। भले लोगोंको बड़ा कष्ट दिया। उस समय विष्णुभगवान् राम बनकर दशरथके घरमें प्रकट हुए। शेषनाग रामजीके छोटे भाई बनकर आये। लक्ष्मीजी राजा जनककी पुत्री सीता हुईं। रामजी और सीताजीका विवाह हो गया। रावण सीताजीको चुरा ले गया। रामजी और रावणमें बहुत बड़ी लड़ाई हुई। रामजीने रावणको मार डाला। सारे संसारमें आनन्द छा गया। इसी तरह कंस राजाको मारनेके लिये विष्णुभगवान् कृष्ण बनकर आये थे।

अभ्यास— १-विष्णुभगवान् कौन हैं?
२-उनके साथ कौन-कौन रहते हैं?
३-विष्णुभगवान् संसारमें कब आते हैं?
४-रामजीने रावणको क्यों मारा?

पाठ ११

[कुछ पाईवाले अक्षर जब आधे होकर 'न' में मिलते हैं, तब उनकी पाई नहीं हटती। वे अक्षर पूरे बनते हैं और 'न' को उनके नीचे लिख दिया जाता है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—]

घ्+न= घ्न	विघ्न	शत्रुघ्न	त्+न= त्न	यत्न	रत्न
प्+न= प्न	स्वप्न		म्+न= म्न	निम्न	

दुलारे—गुरुजी! जब मैं रातको सो जाता हूँ तब बड़ी विचित्र बात होती है। कभी खेलता हूँ। कभी पढ़ता हूँ। कभी तमाशा देखनेमें मग्न रहता हूँ। कभी अच्छी-अच्छी चीजें खाता हूँ। उस समय बड़ा आनन्द

आता रहता है; किंतु जैसे ही आँख खुलती है, वैसे

ही सब मिट जाता है। आनन्दमें विघ्न पड़ जाता है। न कहीं खेलनेवाले साथी, न खेलनेका मैदान। न मिठाईका स्वाद। यह सब क्या है?

गुरुजी—रातमें सो जानेके बाद जो तुम देखते हो, जो सुनते हो या जो करते हो उसे स्वप्न कहते हैं। दिनमें तुम जिन चीजोंको देखते हो, अधिकतर उन्हींको स्वप्नमें देखते हो। दिनमें जो सोचते हो, स्वप्नमें भी वही करने लगते हो। रातमें तुम चारपाईपर रहते हो, परंतु तुम्हारा मन दौड़ता रहता है। दिनके समय मन खेलमें रहता है तो स्वप्नमें खेलते हो। पढ़नेमें मन रहता है तो स्वप्नमें पढ़ते हो। खानेमें मन रहता है तो स्वप्नमें खाते हो। कल रात तुमने कौन-सा स्वप्न देखा, बताओ।

दुलारे—गुरुजी! रातमें मैंने बड़ा सुन्दर स्वप्न देखा। रामलीलाका मैदान था। एक ऊँचे सिंहासनपर रामजी और सीताजी बैठे थे। भरतजी, लक्ष्मणजी और शत्रुघ्नजी खड़े हुए चँवर डुला रहे थे। हनुमान्‌जी पैर दबा रहे थे। रामजी और सीताजीके गलेमें रत्नोंकी मालाएँ पड़ी थीं। बहुत बड़ी भीड़ थी। मैं आगे जाना चाहता था। परंतु पीछेसे किसीने ढकेल दिया। मैं गिर पड़ा। गिरते ही नींद टूट गयी। देखा, तो मैं चारपाईपर पड़ा हूँ। न वहाँ रामलीलाका मैदान है और न रामजीका सिंहासन।

गुरुजी—दुलारे, अभी पाँच दिन पहले रामलीला होती थी। तुम नित्य देखते थे। अब भी तुम्हारा मन रामलीलामें लगा है। इसीसे रातमें तुमने ऐसा स्वप्न देखा। अच्छा स्वप्न देखना हो तो अच्छी बात कहो। अच्छी बात सुनो। अच्छा काम करो। अच्छी बात सोचो।

अभ्यास— १-स्वप्न किसे कहते हैं?
२-स्वप्न क्यों दिखायी देता है?
३-अच्छा स्वप्न कैसे दीखेगा?
४-रातको जो स्वप्न देखा हो उसे सुनाओ?

त्यागने योग्य काम—

किसीको गाली मत दो।
कोई तुम्हें असभ्य न बतावे।
किसीसे व्यङ्ग्य मत बोलो।
कोई तुम्हें क्रूर न कहे।

पाठ १२

['क' की मिलावट कई तरहसे होती है, जैसे—]

क्+ख= क्ख	मक्खन	मक्खी
क्+त= क्त	भक्त	शक्ति
क्+ल= क्ल	शक्ल	क्लेश

[किसी-किसी पुस्तकमें 'त' क के नीचे लिखा रहता है, वह भी ठीक है, जैसे—]

भक्त शक्ति

[कुछ लोग सभी तरहकी मिलावटमें ऐसा 'क' बनाते हैं, यह भी ठीक है, जैसे—]

भक्त शक्ल

['फ' की मिलावट भी इसी तरहकी होती है, जैसे—]

फ्+त= फ्त	मुफ्त	दफ्तर

घरकी मक्खी तुम सबने देखी होगी। इसी शक्लकी एक बड़ी मक्खी होती है। उसको शहदकी मक्खी या मधुमक्खी कहते हैं। वह बहुत समझदार होती है। वह अपना एक सुन्दर घर बनाती है। यह मधुमक्खीका छत्ता कहलाता है। छत्तेमें एक नापके कई छोटे-छोटे सैकड़ों छेद होते हैं।

शहदकी मक्खीमें काम करनेकी बड़ी शक्ति है। वह दिनभर अपने धन्धेमें लगी रहती है। वह उड़कर फूलपर बैठती है। फूलका रस चूसकर वह अपने मुँहमें भर लेती है। फिर उड़कर घर आती है। यहाँ उस रसको वह मुँहमेंसे निकालकर घरके छेदमें रख देती है। रस रखकर वह फिर दूसरे फूलपर बैठती है। उसका रस चूसकर घरमें रख जाती है। इस तरह दिनभर रस जमा

करती है। इसी रसको शहद या मधु कहते हैं। शहद बड़ा मीठा होता है। यह बहुत गाढ़े शरबतकी तरह होता
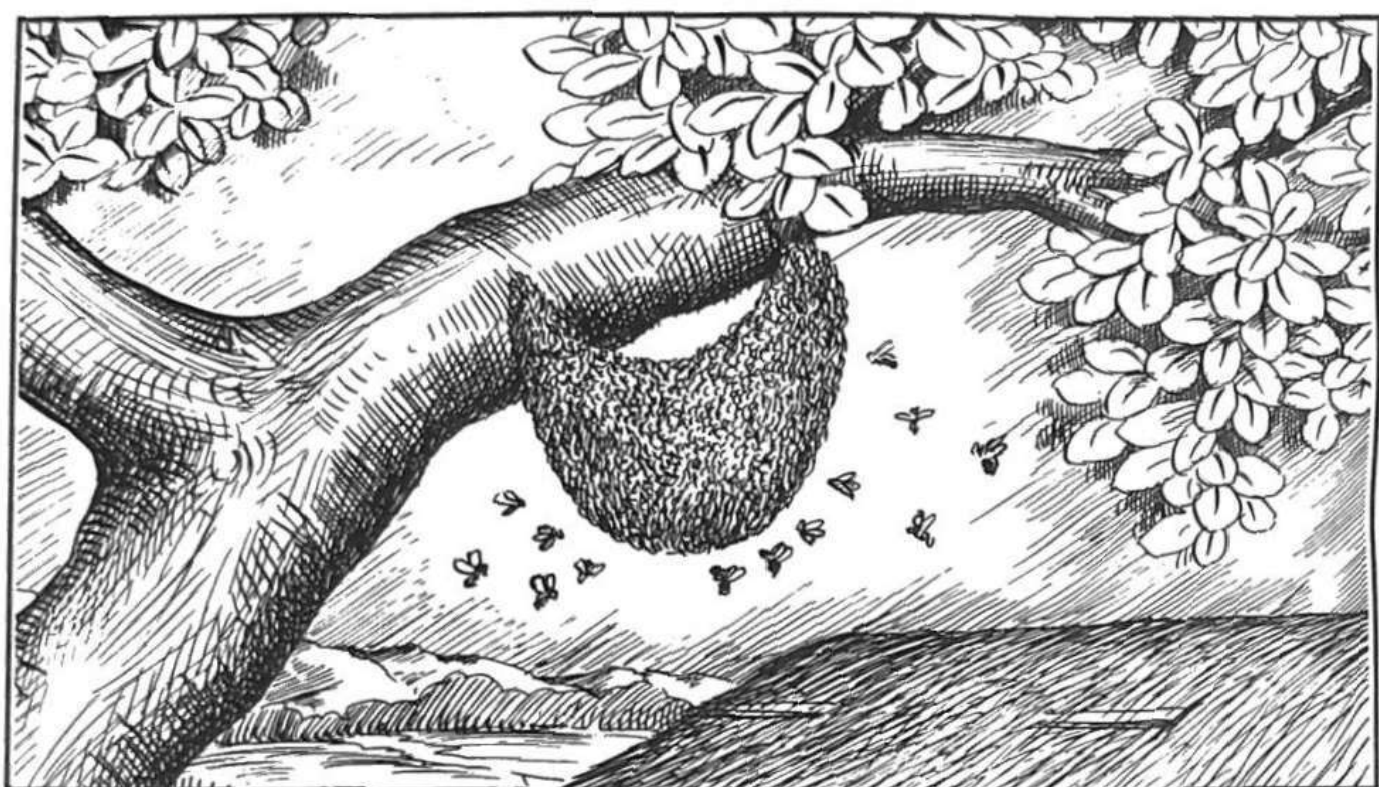
है। शहद दवा और पूजाके काममें आता है। भक्त लोग भगवान्पर शहद चढ़ाते हैं। दूध, दही, घी, चीनी और शहद—इन पाँचोंको मिलाकर पञ्चामृत बनता है। भगवान्को इससे स्नान कराया जाता है।

हमारे बहुत-से काम छोटे-छोटे जीवोंसे चलते हैं। वे हमारी मुफ्तमें सेवा करते हैं। हमें उनको कभी क्लेश नहीं देना चाहिये।

अभ्यास—

१-शहदकी मक्खीमें घरकी मक्खीसे क्या विशेषता होती है?

२-मक्खी शहद कैसे बनाती है?

३-शहद किस काम आता है?

४-पञ्चामृतमें क्या-क्या होता है?

पाठ १३

[कुछ ऐसे अक्षर, जिनके नीचे आगेवाला अक्षर बनाया जाता है—]

ङ् + क =	ङ्क	अङ्क	लङ्का
ङ् + ख =	ङ्ख	पङ्खा	शङ्ख
ङ् + ग =	ङ्ग	गङ्गा	जङ्गल
ट् + ठ =	ट्ठ	मट्ठा	गट्ठर
ड् + ढ =	ड्ढ	गड्ढा	बुड्ढा

अङ्कुर	कङ्घी	कङ्कड़
पङ्ख	विट्ठल	चिट्ठी

देखो यह एक बुड्ढा आदमी है। इसका नाम विट्ठल है। लोग इसे विट्ठू लकड़हारा कहते हैं। इसके सिरपर लकड़ीका गट्ठर है। यह जङ्गलमेंसे लकड़ियाँ बीनता है। फिर एक गट्ठर बनाकर बाजारमें ले जाता है। वहाँ उसे बेचकर पैसे पाता है। उन पैसोंसे यह खानेका सामान

खरीदता है। कुछ पैसे यह बचा लेता है। इन पैसोंसे यह खानेका सामान खरीदकर गरीबोंको खिलाता है। यह खुद गरीब है, पर इसका हृदय ऐसा अच्छा है कि अपनी थोड़ी कमाईको अकेला नहीं खाना चाहता।

विट्ठूके घरमें और कोई नहीं है। यह सबेरे उठकर गङ्गाजी स्नान करने जाता है। गङ्गाजीके रास्तेमें बहुत कङ्कड़ हैं। विट्ठूके पैरमें कङ्कड़ गड़ते हैं, परंतु यह गङ्गाजी जाते समय जूता नहीं पहनता। यह गङ्गाजीका भक्त है। रामदीन ग्वाला इसका मित्र है। वह इसको मट्ठा दे देता है। विट्ठू सबेरे मट्ठा पीकर लकड़ी बीननेके लिये जङ्गलको चला जाता है। दिनभर लकड़ी बीनता है। शामको बाजारमें लाकर बेचता है। खानेका सौदा लेता है। घर आकर रोटी बनाता है।

मन-ही-मन भगवान्‌के भोग लगाकर खाता है। आस-पासके साथियोंके साथ थोड़ी देर भजन गाता है। फिर सो जाता है। नित्य इसका यही काम है। यह अपनेको बड़ा सुखी मानता है।

बालको! मेहनत करनेसे जी न चुराना चाहिये। दूसरेको देकर खाना चाहिये और भगवान्‌का भजन अवश्य करना चाहिये।

अभ्यास— १-लकड़हारा किसको कहते हैं?
२-विट्ठू गङ्गाजी जाते समय जूता क्यों नहीं पहनता?
३-विट्ठू दिनभरमें क्या-क्या करता है?

पाठ १४

['द' के भी आधे होनेपर उसके नीचे अक्षर लिखे जाते हैं, जैसे—]

द्+ग= द्ग	भगवद्गीता	सद्गुरु
द्+द= द्द	गद्दा	खद्दर
द्+ध= द्ध	बुद्धि	शुद्ध
द्+भ= द्भ	सद्भाव	अद्भुत
द्+म= द्म	पद्म	पद्मा
द्+य= द्य	पद्य	विद्या
द्+व=द्व	द्वार	द्वारिका

[ट, ठ, ड और ढ में जब य मिलता है तब इस तरह बनता है—]

ट्+य= ट्य	नाट्य	ठ्+य= ठ्य	पाठ्य पुस्तक
ड्+य= ड्य	ड्योढ़ी	ढ्+य= ढ्य	धनाढ्य

यह चरखा है। इससे सूत काता जाता है। सूतसे कपड़ा बनता है। चरखेके सूतसे बने हुए कपड़ेको खद्दर कहते हैं। खद्दर बहुत अच्छी चीज है। धुलनेपर वह खूब चमकता है। खद्दरकी चद्दर बिछाने और ओढ़नेके काम आती है। विद्याधरकी भगवद्गीताके ऊपर जो कपड़ा चढ़ा है, वह खद्दर है। उसका रंग कत्थई है। सफेद खद्दरका गद्दा बहुत सुन्दर होता है। पाठशालाके दफ्तरकी ड्योढ़ीपर आजकल द्वारिका बैठता है। उसको खद्दरकी पूरी पोशाक मिली है। बड़े गुरुजी भी खद्दरकी धोती और कुरता पहनते हैं।

चरखा हमारे देशकी बहुत पुरानी चीज है। हजारों साल पहले भी घर-घरमें चरखा चलता था। अब भी गाँवमें बहुत चरखे चलते हैं। पहले हमारे देशमें बहुत महीन कपड़ा बनता था। चालीस हाथ कपड़ा एक पतली बाँसकी नलीमें आ जाता था। दूसरे देशवाले हमारे देशका कपड़ा बड़े चावसे पहनते थे। किंतु अब वैसा महीन कपड़ा नहीं बनता। महीन कपड़ा महीन सूतसे बनता है। अब फिर धीरे-धीरे महीन सूत काता जाने लगा है। पद्माकी माँ बहुत महीन सूत कातती है। उसका सूत ऊँचे मूल्यपर बिक जाता है। चरखा चलाकर वह अपना और अपने लड़कोंका पेट भरती है। खद्दर पहनना गरीबोंको रोटी देना है। खद्दर सबसे

शुद्ध कपड़ा है। मशीनके बने कपड़ेमें कुछ अशुद्ध चीजें भी लगती हैं। इसलिये महात्मा गाँधीजीने सबसे पहले यही कहा था—'चरखा कातो, खद्दर पहनो।'

हम सबको सदा थोड़ी देर सूत कातना चाहिये और खद्दर पहनना चाहिये।

अभ्यास— १- चरखा किस काम आता है?

२- खद्दर कैसे बनता है?

३- खद्दर क्यों पहनना चाहिये?

४- महात्मा गाँधीजीने सबसे पहले क्या कहा था?

प्रणाम करो

बड़ोंको प्रणाम करो।
रोज सबेरे प्रणाम करो।
हाथ जोड़कर प्रणाम करो।
सिर झुकाकर प्रणाम करो।
परमात्माको प्रणाम करो।
देवमूर्तिको प्रणाम करो।
तुलसीजीको प्रणाम करो।
गोमाताको प्रणाम करो।

पाठ १५

[कुछ अक्षर जब अपनेमें ही मिलते हैं तब ऊपर-नीचे लिखे जाते हैं, जैसे—]

क्+क= क्क	पक्का चक्की	च्+च= च्च	सच्चा बच्चा
ज्+ज= ज्ज	उज्जैन कज्जल	ट्+ट= ट्ट	लट्टू खट्टा
ड्+ड=ड्ड	लड्डू कबड्डी	न्+न= न्न	गन्ना चुन्नी
ल्+ल= ल्ल	बिल्ली दिल्ली		

चक्कर खच्चर धज्जी

मिट्टी टिड्डा अन्न

देखो, चुन्नी और मुन्ना गन्नेका खेत देखने जा रहे हैं। चुन्नीके हाथमें लट्टू है। इनके अन्नके भी कई खेत हैं। इस मिट्टीसे बढ़िया-बढ़िया चीजें पैदा होती हैं। लेकिन हर
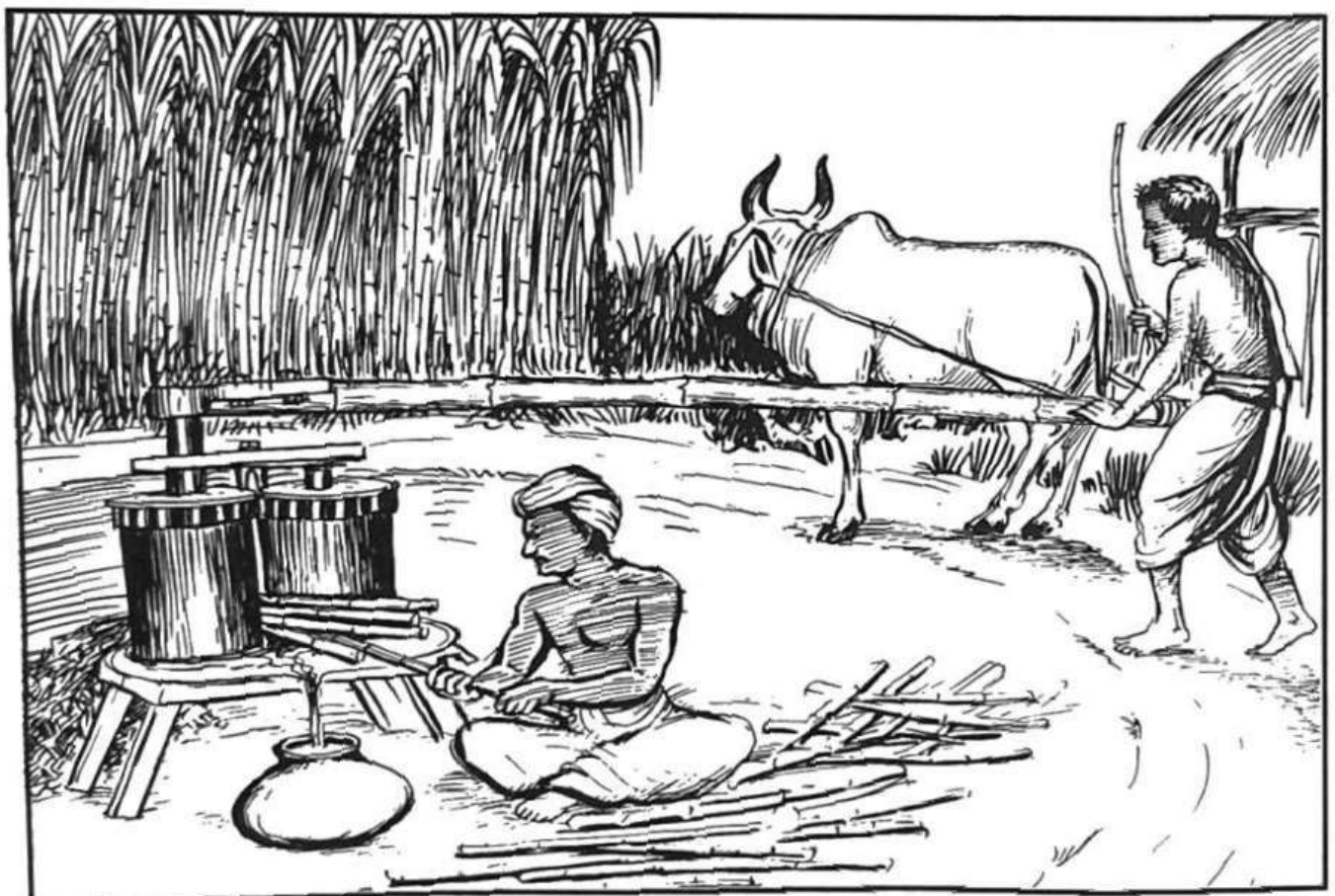
चीजके लिये धूप, हवा और पानी बहुत जरूरी है। इसीलिये भगवान्‌ने इन चीजोंको ज्यादा बनाया है।

गन्नेका रस मीठा होता है। कुछ गन्नोंमें कुछ खट्टापन भी होता है। गन्नेको खेतसे काटकर उसका पत्ता छीला जाता है। फिर उसे लोहेके कोल्हूमें पेरा जाता है। एक बड़े बाँसके सिरेपर एक बैल जोता जाता है। वह बैल चक्करमें घूमता है। बैलके घूमनेसे बाँस घूमता है। बाँसके घूमनेसे लोहेकी बनी छोटी-सी मशीन घूमती है। मशीनमें गन्ना पिस जाता है और उसका रस निकल पड़ता है। रससे शक्कर, गुड़ और चीनी बनती है। चीनीके बिना लड्डू नहीं बन सकता। चीनीसे और भी बहुत चीजें बनती हैं।

गन्नेको दाँतसे छीलकर चूसनेमें बड़ा आनन्द आता है। इससे बहुत लाभ भी होते हैं।

बच्चोंको चीनी बड़ी प्यारी होती है। वे दूधमें चीनी पीते हैं। चीनीका शरबत पीते हैं। रोटीके साथ चीनी खाते हैं। चीनीकी बनी मिठाई खाते हैं। इस तरह वे दिनभर चीनी खाते हैं। यह बहुत बुरा है। अधिक चीनी खानेसे रोग पैदा होते हैं। इसलिये बच्चोंको चीनी कम खानी चाहिये।

अभ्यास—१-गन्नेसे चीनी कैसे बनती है?
२-चीनी किस काम आती है?
३-गन्ना चूसनेमें कैसा लगता है?
४-चीनी अधिक क्यों नहीं खानी चाहिये?

पाठ १६

दस बातें याद रखो

१. एक— किसीकी चीज बिना पूछे न छूओ।

२. दो— हरेक चीजको उसकी ही जगह रखो, इधर-उधर रख देनेसे वह समयपर नहीं मिल सकेगी।

३. तीन— तुमसे कोई बड़ा आ जाय तो उठकर खड़े हो जाओ।

४. चार— बड़ोंको सदा 'आप' कहो 'तुम' नहीं।

५. पाँच— कोई पुकारे तो धीरेसे 'आया जी' या 'जी हाँ आया' कहो।

६. छः— भले लड़कोंका साथ करो, भली किताब पढ़ो, भली चीज खाओ। सादा कपड़ा पहनो, कपड़े गंदे मत करो, सदा साफ रखो।

७. सात— कभी किसीको गाली न दो, कड़वी बात न कहो, झूठी बात न कहो, कोयलकी तरह सदा मीठी बोली बोलो, सच बोलो, थोड़ा बोलो।

८. आठ— कोई भूल हो जाय तो उसे छिपाओ मत, अपनेसे बड़ोंको कह दो।

९. नौ— ठीक समयपर उठो, ठीक समयपर पढ़ो, ठीक समयपर खाओ, ठीक समयपर पाठशाला जाओ और ठीक समयपर खेलो।

१०. दस— कभी डरो मत, सब जगह भगवान् हैं, वे कभी भी तुमसे अलग नहीं होते।
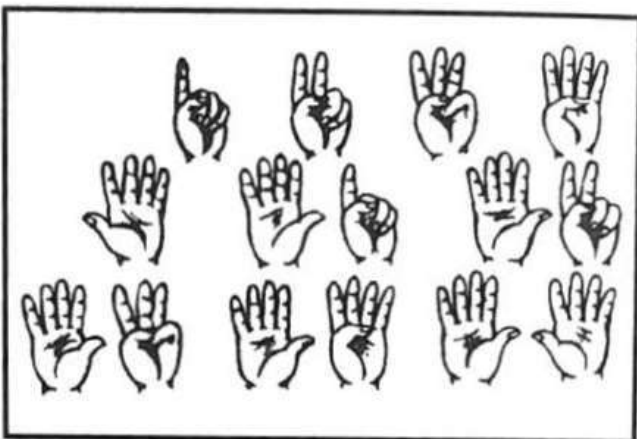
पहाड़ा ग्यारहसे बीसतक

११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०
४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०
५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००
६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२	१०८	११४	१२०
७७	८४	९१	९८	१०५	११२	११९	१२६	१३३	१४०
८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०
९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०
११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००

11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
22	24	26	28	30	32	34	36	38	40
33	36	39	42	45	48	51	54	57	60
44	48	52	56	60	64	68	72	76	80
55	60	65	70	75	80	85	90	95	100
66	72	78	84	90	96	102	108	114	120
77	84	91	98	105	112	119	126	133	140
88	96	104	112	120	128	136	144	152	160
99	108	117	126	135	144	153	162	171	180
110	120	130	140	150	160	170	180	190	200